अपनी बात

निस्केयर
NISCAIR

विज्ञान प्रगति

जनवरी 2019

निदेशक
डॉ. मनोज कुमार पटैरिया

सम्पादक
डॉ. बालकराम

सम्पादन सहायक
शुभदा कपिल

प्रोडक्शन अधिकारी
पंकज गुप्ता

कला अधिकारी
नीरू विजन

कम्पोज़िंग
मीरा देवी

वरिष्ठ बिक्री एवं वितरण अधिकारी
लोकेश कुमार चोपड़ा

आवरण
नीरू विजन

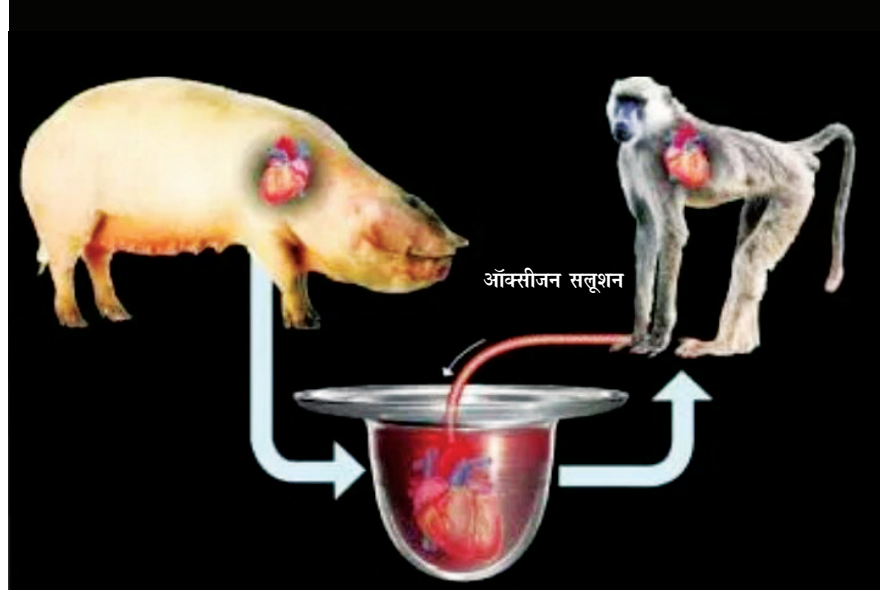

अब इंसान के शरीर में धड़केगा जानवर का दिल

इसे विज्ञान का चमत्कार कहें या इंसान की काबीलियत पर यह सच है कि अब वह दिन दूर नहीं जब पशुओं के अंगों को इंसानों के शरीर में प्रत्यारोपित किया जा सकेगा। यानी अब प्रत्यारोपण के लिए अंग पाने के लिए लोगों को लंबा इंतजार नहीं करना पड़ेगा। दुनियाभर में अभी अंग दान को लेकर बहस चल रही थी कि विज्ञान ने नया आविष्कार कर अंग प्रत्यारोपण की समस्या को भी सुलझा दिया। चिकित्सा क्षेत्र में वैज्ञानिकों ने तेजी से क्रांतिकारी कदम बढ़ाए हैं। गंभीर बीमारी से जूझ रहे लोगों के शरीर में सुअर का दिल लगाने की संभावना काफी ज्यादा बढ़ गई। जर्मनी के वैज्ञानिकों ने पूरे मेडिकल व विज्ञान जगत को अपने नए प्रयोग से हैरानी में डाल दिया है। इन्होंने एक बैबून (बंदर की प्रजाति) के शरीर में सफलतापूर्वक सुअर का दिल लगाने में कामयाबी हासिल की है जिसके कारण बैबून 6 महीने से ज्यादा समय तक जीवित रहा।

वैज्ञानिकों ने इसे मील का पत्थर बताया है। एक पशु के स्वस्थ दिल को दूसरी प्रजाति के शरीर में प्रत्यारोपित करने की प्रक्रिया को 'एक्सेनाट्रांस्प्लांटेशन' कहा जाता है। *नेचर* जर्नल में प्रकाशित इस अध्ययन में माना जा रहा है कि इस प्रक्रिया से भविष्य में इंसानों को भी नया जीवन दिया जा सकेगा। प्रत्यारोपण के लिए सुअरों के जीन में बदलाव किया गया ताकि दूसरी प्रजाति की प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को दबाया जा सके।

जर्मन हर्ट सेंटर बर्लिन के डॉक्टर क्रिस्टोफ नोसाला का कहना है कि वर्ष 2030 तक अमेरिका में दिल का दौरा पड़ने के मामले, 80 लाख तक पहुँच सकते हैं। वैज्ञानिकों की मानें तो जीन में बदलाव सुअर इस समस्या का समाधान हो सकता है। हालांकि इस तरह के शोध में पहले भी वैज्ञानिकों को सीमित सफलता मिली है। म्यूनिख में लुडविग मैक्समिलियन यूनीवर्सिटी के शोधकर्ताओं बैबून को 57 दिन तक जीवित रखने में कामयाब रहे थे। शोधकर्ताओं ने तीन अलग-अलग समूहों पर यह प्रयोग किया है। पूरे अध्ययन के दौरान 16 बैबून शामिल किये गए थे। अंतिम ग्रुप में उन्होंने प्रत्यारोपण में सफलता पाई। हृदय रोग के प्रोफेसर मैक्ग्रेगॉर का कहना है कि अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण है। यह हमें दिल की बीमारी की समस्या को खत्म की राह दिखाता है।

शोधकर्ताओं ने दिल को ऑक्सीजन पहुंचाते हुए इस लंबी प्रक्रिया को पूरा किया है। इसके लिए उन्होंने पूरे समय अंग में रक्त परिसंचरण किया। इस बजह से बैबून का रक्तचाप कम होने के बावजूद प्रत्यारोपित अंग का आकार नहीं बढ़ा।

मूल्य

एक अंक	:	30.00 रुपये
एक वर्ष	:	300.00 रुपये
दो वर्ष	:	570.00 रुपये
तीन वर्ष	:	810.00 रुपये

विदेशी वार्षिक सदस्यता : 65$
शिकायत : 011-25841647
ई-मेल : lkc@niscair.res.in

सम्पादकीय : 011-25841769, 011-25846301, 04-07/370
प्रोडक्शन : 011-25847353, 25846301, 04-07/217, 337
विज्ञापन : 011-25843359
बिक्री : 011-25841647, 25846301, 04-07/286, 289
फैक्स : 011-25847062
ई-मेल : vp@niscair.res.in
वेब साइट : http://www.niscair.res.in

© राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान

लेखकों के कथनों ओर मतों के लिये सी.एस.आई.आर. -राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान, डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग, नई दिल्ली - 110 012 उत्तरदायी नहीं है।

पत्रिका से संबंधित सभी विवाद दिल्ली न्यायालय द्वारा ही निपटाये जायेंगे।